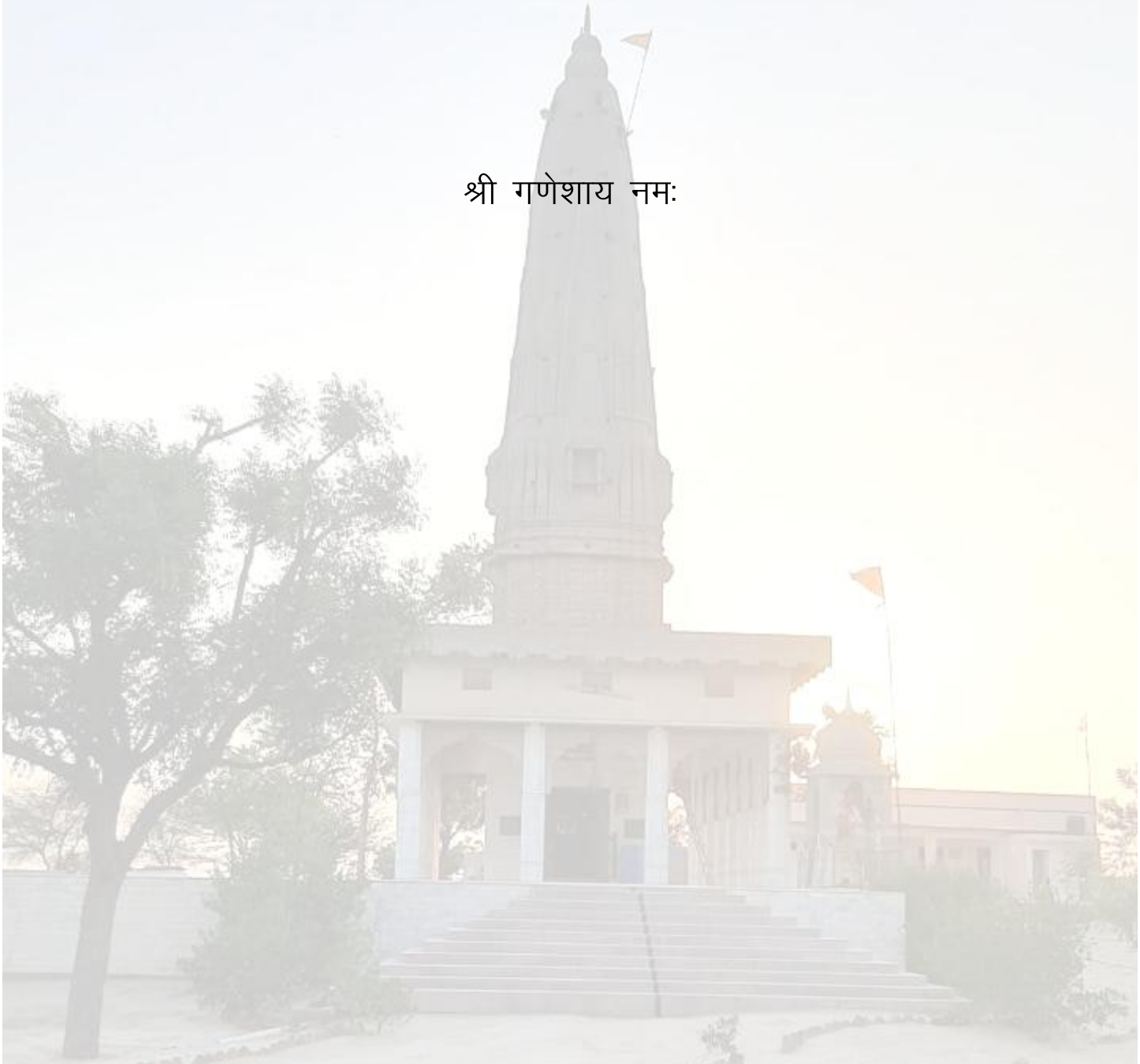

श्री गणेशाय नमः

श्री श्री 1008 श्री गुमानीराम जी दादोजी महाराज

मैणासर धाम

(जीवनी व पर्चे)

भाग – प्रथम

श्री श्री 1008 ब्रहम्निष्ठ योगीराज, संत श्री गुमानीरामजी उर्फ दादोजी महाराज का जन्म आसोज बदि 8 विक्रम संवत 1898 को बींजाराम जी खीचड़ धर्म पत्नि आशादेवी की सातवीं संतान के रूप में मैणासर गांव में पैदा हुये। बाल्यकाल अवस्था में ही इनका स्वभाव बहुत ठण्डा था। बींजाराम, दुदाराम दो भाई व तीन बहिन (किसनी, फुला, व धनी) थे। बींजाराम जी के 9 लड़के व 1 लड़की कुल 10 संतान हुई। दुदाराम जी के 4 लड़के हुये।

श्री गुमानीराम जी बाल्यकाल में बकरीयों की ग्वाली करते थे। चौमासा की ऋतु थी, घर के सभी सदस्य खेतों में गये हुये थे। गुमानीराम जी की उस समय 12 वर्ष की उम्र थी। गुमानीराम जी व एक पड़ौसी रावणा राजपूत डूंगर जी दोनों भाई गांव के बीड़ में बकरी चरा रहे थे। दोपहर का समय था। गर्मी तेज थी। पानी की माटी की लोटड़ी लेकर गये हुये थे। पानी लोटड़ी में खत्म हो गया था। खाने की भी भूख लग गई थी। दोनों बकरीयों को लेकर घर आनें की तैयारी कर रहे थे। इतने में भगवा वेषधारी साधू के रूप में एक संत उनके पास आया और पेड़ (खेजड़ी) की छाया में बैठ गया। दोनों बच्चों को संत ने बोला – मुझे बहुत प्यास लगी है। बालकों मुझे पानी पिलाओं। पानी उनके पास था नही तो दोनों आपस में मुँह ताकने लगे। तब संत समझ गया इनके पास पानी नहीं है। संत हंसकर बोला – बच्चों आपकी पानी की लोटड़ी मेंरे पास लाओं। संत ने लोटड़ी अपने हाथ में पकड़ी और गट,गट पानी पीने लगें, थोड़ा पानी पीकर बच्चों को बोला आप भी पीलों। मुझे पता है। आप भी प्यासे हो। दोनों बच्चों ने भी पानी पीया, पर दोनों को अफसोस हुआ की लोटड़ी खाली थी। ये तो संत का चमत्कार ही है।

संत महाराज फिर बोलें – बच्चों में अन्नाज खानें का उपवास रखता हूं। पूरे एक दिन–रात में एक बार एक ग्लास दूध पीता हूं। आज अभी तक दूध मिला नहीं है। अतः आप आपकी बकरियों का दूध निकालकर मुझे एक ग्लास दूध पिलाओं। दोनों बच्चे यह बात सुनकर भी हस्तप्रभ रह गये। क्योंकि कोई भी बकरी उनके पास ब्यायी हुई नहीं थी। सभी बकरियाँ कंवारी थी। संत महाराज जी समझ गये और ईशारा करकें बोले कि उस बकरी का दूध निकाल लाओं। गुमान जी महाराज लोटा लेकर एक बकरी का दूध निकालनें लगे। लोटा दूध से भर गया भरा हुआ लोटा संत महाराज जी को पकड़ा दिया। संत महाराज जी ने वों पूरा लोटा दूध गटा –गट पी लिया। दूध पी कर संत महाराज खड़े हो गये एवं दोनों बच्चों का शुभाशिर्वाद देकर चलनें लगे। दोनों बच्चे बोलें – संत महाराज जी हम भी बकरी घर छोड़कर आते है। आप यहीं रूकियें। हम भी आपके साथ चलेंगे। संत जी बोलें – मैं जंगल में वास करता हूं, न मेरे पास कुछ खानें – पीनें को है। आप अभी बच्चें हो मेरे साथ नहीं रह सकते। अतः मैं चलता हूं। दोनों बच्चें बकरियाँ लेकर भागे – भागे घर आयें। बकरियों को दोनों ने अपने – अपने घर में बांध दिया।

श्री गुमानीराम जी महाराज ने रावणा राजपूत भाई से बोला – भाई जल्दी आओं। संत महाराज जी दूर चले गये होगें। रावणा राजपूत साथी ने जाने से इंकार कर दिया और बोला कि हम जंगलों में भूखे– प्यासे साधू के साथ कहा भटकेंगे। घर वाले ढूंढेगें इसलिए मैं नहीं जाऊँगा। गुमानीराम जी महाराज समझ गये थे कि वो ऐरा–गेरा साधु नहीं हो सकता। भगवा रूप धारण करकें भगवान ही उनको दर्शन देनें के लिए आया था। अतः गुमानीराम जी महाराज अकेले 12 वर्ष की बाल्यकाल आयू में साधू को पकड़ने के लिए निकल पड़े। गांव से 4 किलोमीटर दूर मैणासर के चैनाणी जोहड़ के एक टीले पर एक कंकेड़ा के वृक्ष के नीचें साधू से जा मिलें। शाम को घर वाले खेतों से घर आये तो गुमानीराम जी घर में नहीं मिलने पर रावणा राजपूत के बच्चे को पूछा तो उस बच्चे ने सारी कथा ब्यान कर दी। घर वाले गुमानीराम जी के पैरों के निशानों के पीछे – पीछे ढूंढते हुये उस कंकेड़े के पेड़ के पास पहुंच गये। उस कंकेड़े के पेड़ के नीचे संत महाराज जी एवं गुमानीराम जी दोनों के पद– चिह्न मिलें। पर वहां से आगे कोई पद–चिह्न नहीं थे। अतः निराश होकर घर वाले वापिस घर आ गयें।

श्री गुमानीराम जी 12 वर्ष गुरू मिलतारूराम के सानिघ्य में भगवान दत्तात्रेय के 108 धूणों पर 12 वर्ष तक बिना अन्न–जल लिये हुये घोर तपस्या की, योग–माया व भगवान दत्तात्रेय व गुरू मिलतारूराम की आध्यात्मिक शक्ति द्वारा 108 धुणों के अपने–आप फेरी लगती रहीं। पूर्ण ब्रहमनिष्ठ होने के बाद गुरू ने अपने हाथ से एक झुलणा व एक भगवान दत्तात्रेय जी की प्रतिमा भेंट की। सारी आध्यात्मिक शक्ति इस झुलणा में है।

नोट ::– इस झुलणा को आप व आने वाली पीढ़ी भी इसे संभाल कर रखना।

इसके बाद गुरू मिलतारूराम के आदेशानुसार अपने घर मैणासर वापिस आकर शादी की, व गृहस्त जीवन बितानें लगे। गुमानीराम जी की शादी भींवसर बुद्धाराम जी पांडर की बेटी नोजी से हुई। गुमानीराम जी के दो लड़के व एक लड़की कुल तीन संतान हुई। पुत्र रतीराम, दुसरा पुत्र रामूराम तथा तीसरी पुत्री हुकमा के नाम से जाने गये। गृहस्त जीवन व अपनी संतानों का पालन – पोषण करते हुये। शीतल स्वभाव से कभी भी अपनी भक्ति को कमजोर नहीं होने दिया। समय बीतता गया। गुमानीराम जी ने अपने जीवन काल में कई पर्चे दिये। मुझे जितना ज्ञात है कुछ पर्चो का विवरण मैं आगे कर रहा हूँ :–

1. मैणासर गांव में तीन भक्ति संत एक साथ हुये थे। (क) गुमानीराम जी, (ख) मीर समुदाय में सांई जी, (ग) दास सम्प्रदाय में जैठारामजी तीनों ही उस समय में अच्छे संतों की गणना में विख्यात थे। सांई जी ने गुमानीरामजी को बोला था कि मैं जीवत समाधि लुंगा। आपकी देख–रेख में मेरी समाधि खुदवादों। जिस दिन में समाधि लेऊँ, तब आपके सिवाय किसी की छांव नहीं पड़नी चाहिए ओर प्रशासन को भी आपको संभालना होगा। दिन बिततें गये। एक दिन समाधि का समय हो गया था। उस समय गुमानीराम जी समय को भूलत हुये नागौर कबीर दास जी की धाम में रात्रि जागरण में गये हुये थे। सांईजी समाधि स्थल पर आ गये। गुमानीराम जी को आवाज दी। आवाज गुमानीराम जी को सुनाई दी। तब उनको तुरन्त याद आ गया कि सांई जी का समाधि का समय हो गया है। गुमानीरामजी अपनी आध्यात्मिक शक्ति द्वारा चंद समय में समाधिस्थल पर पहुंच गये। प्रशासन बोला हम जीवित समाधि नहीं लेने देगें। गुमानीरामजी ने भगवान दत्तात्रेय व अपने गुरू मिलतारूराम को याद करके प्रशासन जहां खड़ा था। वहीं पर अपने हाथ के इशारे से प्रशासन को जब तक समाधि का कार्य पूर्ण नहीं हो गया तब तक बंदी की तरह बना दिया। प्रशासन न आगे आ सका न पीछे जा सका। इस तरह सांईजी की समाधि लगवादी।

2. एक समय श्री गुमानीराम जी महाराज गांव मैणासर में भगवान की भक्ति में लीन चुप–चाप बैठे थे। अचानक गांव का एक आदमी आया और बोला – महाराज आंखे खोलिये। कोई अनहोनी हो सकती है। मैं दौड़ा – दौड़ा आपके पास आया हुँ। गांव की उत्तर दिशा से एक नर–भक्षी, राक्षस के जैसा दिखने वाला कोई आदमी आ रहा है। वो कुछ भी नुकसान कर सकता है। अतः ऐसा सुनकर श्री गुमानीराम जी महाराज तुरंत प्रभाव से उसकी तरफ चल पड़े। गुमानीराम जी को देखकर वो नर–भक्षी खुश हुआ कि कोई अपने–आप ही चला आ रहा है। गुमानीराम जी ने आध्यात्मिक शक्ति का प्रयोग किया और वह नरभक्शी चुप–चाप गुमानीराम जी के साथ गांव में आ गया। वह नर–भक्षी मंत्रो का ज्ञाता था। अपने मंत्रो की शक्ति से गुमानीराम जी को भयभीत करने के लिए अपने शरीर का रूप शेर की भांति बनाकर गुमानीराम जी को दिखाया। गुमानीराम जी ने अपनी आध्यात्मिक शक्ति को प्रयोग कर उसकों वापिस मानव रूप दे दिया। गुमानीराम जी ने उससे कहा – भगवान की भक्ति से ऐसा नहीं होता यह तो राक्षसी विद्या है। फिर श्री गुमानीराम जी ने भगवान श्री दत्तात्रेय व अपने गुरू मिलतारूराम को याद करके अपनी आध्यात्मिक शक्ति से बैठ–बैठे अपने पेट को पीठ की तरफ व पीठ को पेट की तरफ कर ली। यह चमत्कार देखकर वह नर–भक्षी भयभीत होकर गुमानीराम जी के चरणों में गिर पड़ा व गिड़–गिड़ाने लगा कि मैं आज के बाद ऐसा नहीं करूंगा। मुझे माफ कर दो। गुमानीराम जी ने उसको खाना खिलाकर गांव के पूर्व दिशा में ले जा कर कहा – अब यहां से चलें जाओं और कहीं भी जानवर व मानव का नुकसान किया तो

मैं उसी समय तुझें वहां खड़ा मिलूंगा, और दुबारा में तेरी खैर नहीं करूंगा। गुमानीराम जी का चरण स्पर्श करके उस नरभक्षी ने संकल्प लिया कि मैं आपके नाम का भजन करूंगा। व कहीं भी नुकसान नहीं करूंगा। अतः श्री गुमानीराम जी ने एक नर–भक्षी को अच्छा मानव बना दिया।

3. एक समय की बात है कि श्री गुमानीराम जी महाराज के छोटे भाई बलराम की शादी थी। बारात बाटड़ानाऊ गयी थी। बारात में श्री गुमानीराम जी महाराज भी गये थे। शेखावाटी में बाटड़ानाऊ के राजघराने ने श्री गुमानीराम जी महाराज के बारे में कई चर्चायें सुन रखी थी। राजघराने को पता लग गया कि श्री गुमानीराम जी महाराज आज बाटड़ानाऊ में आये हुये है। अतः राजघराने ने उसकी परीक्षा लेने की ठान ली। नौकर को आदेश दिया कि तुम श्री गुमानीराम जी को जाकर बोलो कि आपको राजघराने ने याद किया है। अतः मेरे साथ चलों। एक बार तो श्री गुमानीराम जी ने इंकार कर दिया कि मेरा बाटड़ानाऊ के राज–घराने से क्या काम हैं। दुबारा जब राजघरानें का नौकर जब वापिस आया कि महाराजा को आपसे अतिआवश्यक काम है। अतः आपको चलना होगा। श्री गुमानीराम जी उस राजघराने के नौकर के साथ चल पड़े। महाराज ने अपनी चतुराई से परीक्षा लेने की ठान ली। एक चारपाई रखकर उस पर चादर बिछा दी व उस पर आप बैठ गये। तथा पास में एक मुढ़ा रख दिया। ज्योंही श्री गुमानीराम जी वहां पहुंचे। महाराज ने रामा – श्यामा की। और महाराजा के पास में चारपाई पर बैठ गये। महाराजा को गुस्सा आया कि आप की मेरे बराबर बैठने की हिम्मत कैसे हुई। अतः महाराज ने चारपाई से उठकर खूंटी पर टंगी हुई तलवार खींच ली। लेकिन श्री गुमानीराम जी ने अपनी आध्यात्मिक शक्ति द्वारा जैसे ही तलवार लेकर हाथ उठाया। वो हाथ ऊपर की तरफ ही रह गया, नीचे नहीं आया। और जैसे ही दुसरे हाथ से दुसरी तलवार उठाई यह हाथ भी पहले की तरह ऊपर ही रह गया। तब जाकर महाराजा को पता लगा कि श्री गुमानीराम जी वास्तव में साधारण व्यक्ति नहीं है। देव तुल्य मानव है। अब महाराजा के दोनों हाथों में तलवार थी। दोनों हाथ ऊार के ऊपर थे। नाक और घुटनों के बल महाराजा श्री गुमानीराम जी के चरणों में गिरकर गिड़–गिड़ाने लगे। बोले मुझे माफ कर दो। मेरे हाथों को नीचे की तरफ कर दों। मैं आप के सामन नतमस्तक होकर मेरी गलती का पश्चाताप करूंगा। हमेशा आपके नाम का गुणगान करते हुये अहम का त्याग कर दूंगा। श्री गुमानीराम जी ने महाराजा को आशिर्वाद दिया व वहां से वापिस आ गये। यह चमत्कार श्री तेजाराम जी बाटड़ ने अपनी आंखों से देख लिया था। उसी समय से श्री तेजाराम बाटड़ श्री गुमानीराम जी की शरण में आकर अपना गुरू मान लिया व हमेशा रात को घर के सभी सदस्य सोने के बाद 18 किलोमीटर पैदल चलकर रात को गुरू श्री गुमानीराम जी से शिक्षा – दीक्षा लेने लगे।

दुसरा मैणासर में भैराराम जी जोशी ने भी श्री गुमानीराम जी को अपना गुरू मानकर दोनों शिष्यों ने रात को एक साथ शिक्षा – दिक्षा लेनी शुरू कर दी। श्री तेजाराम जी रात को गुरू से शिक्षा– दिक्षा लेकर गुरू की आध्यात्मिक शक्ति द्वारा सुबह चार बजे घर के सभी सदस्य उठने से पहले अपनी चारपाई पर सो जाते थे। काफी समय तक ऐसा चलता रहा। घर के सभी सदस्यों को पता नहीं लगने दिया कि तेजाराम रात को सोने के बाद व सुबह उठने से पहले मैणासर अपने गुरू के पास जा कर आते है। यह गुरू शक्ति द्वारा तेजा राम जी की महानता थी।

4. एक समय की बात है श्री गुमानीराम जी महाराज के पास कोई मेहमान आया हुआ था। आपस मे बातचीत कर रहे थे। इतने में श्री गुमानीराम जी को एक अंदेशा हुआ। तब उन्होने अपनी दिव्य दृष्टि से देखा तो चार–पांच डाकू सौ किलोमीटर दूर एक घने जंगल में एक आदमी अपनी औरत के साथ ऊंट की सवारी से एक गांव से दूसरे गांव जा रहे थे। रस्ता जंगल से होकर गुजरता था। डाकूओं ने उनको पकड़कर ऊंट से नीचे ऊतार लिया। उस आदमी को पेड़ के पास ले जाकर रस्सी से बांध दिया और औरत के गहने उत्तारना शुरू कर दिया। सारे शरीर के गहनें उतारने के बाद दोनों पैरों में दो चाँदी की कड़ी, दोनों हाथों में दो चाँदी के बाजू बच गये थे। डाकू आचार–विचार कर हथियार लाकर दोनों हाथ–पैर काटकर गहना निकाल कर ले जानें की तय कर रहे थे। इधर श्री गुमानीराम जी महाराज ने मेहमान को बोला आप थोड़ी देर यहां रूकीयों में थोड़े समय में वापिस आ रहा हूँ। ऐसा कहते ही श्री गुमानीराम जी मेहमान को दिखाई नहीं दिये। अपनी आध्यात्मिक शक्ति द्वारा पवन वेग से डाकूओं के पास पहूंच गये। डाकू हाथों और पैरों पर हमला करने ही वाले थे। इतने में श्री गुमानीराम जी महाराज अचानक प्रकट हो गये। डाकूओं को अचानक दूसरा आदमी देखकर अचम्भा हुआ। इस घने जंगल में यह आदमी कहां से आ गया। श्री गुमानीराम जी महाराज ने डाकूओं को ललकारा ओर बोलें – रूक जाओं और छोड़ दो इस औरत को। तब डाकूओं को गुस्सा आ गया और चारों – पांचों डाकूओं ने अपने हथियार उठा लिए। श्री गुमानीराम जी महाराज ने अपनी आध्यात्मिक शक्ति से उन डाकूओं को न इधर–उधर हिलने दिया और न हथियार चलाने के काबिल छोड़ा। हथियार चलाने के लिए जैसे ही हाथ ऊपर उठाऐं वैसे के वैसे हाथ ऊपर ही रह गये। श्री गुमानीराम जी ने डाकूओं से वो सारे गहनें वापिस लेकर उस औरत को दे दिये। उस आदमी को पेड़ से खोलकर दोनों को बोले – अब आप आराम से ऊंट पर बैठकर अपने घर चले जाओं। दोनों श्री गुमानीराम जी के पैरों में गिर गये। फिर श्री गुमानीराम जी महाराज ने उनको आशिर्वाद दिया।

तब उस आदमी ने पूछा कि – महाराज आपका नाम एवं गांव हमें बताओं ताकि हम दूबारा आशिर्वाद लेने के लिए आपके पास पहुंच सके। श्री गुमानीराम जी ने आपका नाम बताया एवं गांव का नाम मैणासर बताकर उन दोनों को ऊंट पर चढ़ाकर आशिर्वाद के साथ रवाना कर दिया। उसके बाद श्री गुमानीराम जी महाराज वहां से रवाना होने लगें। तब डाकू गिड़–गिड़ाने लगे – महाराज हम पहले जैसा थे वैसा ही वापिस करो। हम अब कभी भी जीवन काल में लूट–कोश व डाका डालने का काम नहीं करेंगे।

श्री गुमानीराम जी देव तुल्य होने के नाते उनको दया आ गई। और तथास्तु कह दिया। चारों–पांचों डाकू श्री गुमानीराम जी के पैरों में गिर गये। तथा आज तक जो किया उसकी क्षमा मांगने लगे। श्री गुमानीराम जी महाराज ने कहा – पूरे जीवन पश्चाताप करों एवं श्री भगवान का भजन करों। श्री भगवान आपकों माफ कर देगें। उसके बाद डाकू चले गये एवं श्री गुमानीराम जी महाराज वहाँ से गायब होकर गांव मैणासर वापिस आ गये। तब–तक मेहमान घर में ही बैठा था। श्री गुमानीराम जी ने सारी कथा बताई। मेहमान को बहुत अचम्भा हुआ। यह चर्चा दूर– दूर तक फैल गई। समय बीत जाने के बाद वो आदमी जिसको श्री गुमानीराम जी ने डाकूओं से छुड़ाया था। गांव और नाम पूछते– पूछते मैणासर आया। और कुछ समय पहले आप बीती बताई। लोगों को अचम्भा हुआ और श्री गुमानीराम जी महाराज को मानने लगे। समय बितता गया श्री गुमानीराम जी महाराज के पास रोगी– भोगी जो भी आस लेकर आया उसको खुश करके ही वापिस भेजा। श्री गुमानीराम जी के बारे में चर्चा दूर–दूर तक फैल गई थी। जो भी उनके पास आया उनको सफल करके वापिस भेजा। श्री गुमानीराम जी के बहुत सारे वृतान्त यानी पर्चे है। लेकिन मुझे सुक्ष्म ज्ञान होने के नाते मैनें जो व्याख्यान लिखें हैं। यह सब हमारे बुजुर्गो ने बताये थे। उनके कहने के आधार पर ही लिखा है।

समय बितता गया बैसाख बद्धि नौमी का दिन था। श्री गुमानीराम जी के परिवार के सभी सदस्य अपने घर में बैठे थे। अचानक नौ भाईयों में तीन नम्बर बड़ा भाई श्री अमराराम जी ने कहा – गुमानीराम मेरा अब जाने का समय आ गया है। अतः मुझे अब भगवान के घर जाना पड़ेगा। तब श्री गुमानीराम जी ने कहा – कल बैसाख बदि दशमी श्याम को मैं देवलोक को प्राप्त हो जाऊँगा। आप परसों बैसाख बदि ग्यारस को देवलोक हो जाओगे। हम दोनों भाईयों की बैसाख बदि ग्यारस को दोनों की अर्थी एक साथ उठेगी। जैसा की श्री गुमानीराम जी ने कहा ठीक वैसा ही हुआ। बैसाख बदि दशमी के दिन पुरे गांववासियों को इकट्ठा करके मृदु वचनों से लोगों को संदेश दिया कि – मैं अभी चंद समय में ही देव लोक गमन हो जाऊँगा। मेरा श्वास आंखे बंद करने के साथ दसवें द्वार यानी कपाल से निकलेंगा। ज्यों ही श्वास निकलेगा मेरी कपाल फट जाएगी एवं थोड़ी आवाज होगी।

आप लोग घबराना मत ओर रोना मत। मेरा शरीर जाएगा मैं हमेशा हजारों साल आपेक पास ही रहूंगा। मुझे जहां भी याद करोगे, मैं हाजीर मिलूंगा। मेरा सिर्फ दोनों समय सुबह व शाम घी का दीपक जला देना। घमण्ड – बाजी मत करना। जब श्री गुमानीराम जी महाराज देवलोक हुयें। तब गांव वालों के साथ तेजाराम जी बाटड़ भी पास में बैठे थे। भैराराम जी जोशी घी का व्यापार करते थे। इसलिए दूसरे गांव गये हुये थे। जब वा गांव आये तो श्री गुमानीराम जी महाराज नहीं मिलने पर उनको बहुत बड़ा आघात पहुंचा। साथ ही उनकी आत्म शक्ति कमजोर हो गई थी। लेकिन पूरी जिन्दगी श्री गुमानीराम जी महाराज का नाम का व्याख्यान करते हुये ही अपनी जीवन – लीला समाप्त की थी।

श्री तेजाराम जी बाटड़ ने श्री गुमानीराम जी महाराज से बहुत शक्तियाँ अर्जित कर ली थी। श्री गुमानीराम जी महाराज की शक्तियाँ का तेजाराम जी ने बहुत प्रचार– प्रसार किया था। श्री गुमानीराम जी महाराज का गुणगान करते हुये तथा इनके नाम का भजन करते हुये माघ सूदि 15 संवत 2012 को श्री तेजाराम जी बाटड़ भी देवलोक गमन हो गये थे। श्री तेजाराम जी बाटड़ के भी जीवन में बहुत पर्चे है। उनका देवलोक गमन होने के बाद में बहुत बड़ा आश्रम बना हुआ है। यह आश्रम उनकी जन्मभूमि बाटड़ानाऊ में बना हुआ है। जहाँ बहुत दूर– दराज से भक्तगण दर्शन के लिए आते है। इनके क्षेत्र में इनकी बहुत अधिक मान्यता है। आश्रम की सेवा अभी बन्नानाथ जी महाराज करते हैं।

श्री गुमानीराम जी महाराज ने देवलोक होते समय एक बात बोली थी की अगर आप घर में छोटा मंदिर बना सको तो या नहीं बना सको तो मेरा झुलणा जहां भी रखों , वहाँ सिर्फ दोनों समय सुबह– शाम दीपक जला देना। मेरा बड़ा मंदिर गांव के बाहर 100 वर्ष बाद अपने आप बन जाएगा। आप परेशान मत होना। जैसा महाराज ने बोला था वैसा ही हुआ, सौ साल बाद गांव के बाहर जहां श्री गुमानीराम को श्री भगवान के दर्शन हुये थे। वहाँ बहुत ऊँचे टीले पर सिकरबंद मंदिर बन कर तैयार हो चुका है। उनके घर में और वहां पर दोनों मंदिरों में सुबह शाम पूजा अर्चना होती है। मंदिर का बहुत ही भव्य स्थान है। दोनों मंदिरों में बहुत भक्तगण आते है। श्री गुमानीराम जी महाराज ने देवलोक गमन होते समय एक बात लोगों से कहीं कि जिसको भी भूत–प्रेत, ओपरी– पराई की छाया पड़ती हो या डर लगता हो तो मेरे नाम मात्र से ही वो सब आपसे अलग हो जाएगी।

आज भी प्रत्यक्ष प्रमाण है कि ऐसी बिमारियों का किसी को भी कष्ट होता हो तो श्री गुमानीराम जी महाराज का नाम लेकर इनके मंदिरों में आकर दर्शन करने मात्र से ही कष्ट का निवारण हो जाता है। बाकी और कोई भी कष्ट हो श्री गुमानीराम जी महाराज के नाम से ही सभी कष्टों का निवारण होता है।

5. श्री गुमानीराम जी महाराज का छोटा भाई उमाराम जी का लड़का पेमाराम जी बीकानेर के महाजन (बणिया) का आसाम में अपना कारोबार था। वह महाजन अपना कारोबार संभालने के लिए पेमाराम जी को आसाम लेकर चला गया। महाजन का पुरा कारोबार पेमाराम जी ही संभालते थे। काफी समय पेमाराम जी को आसाम में रहते हुये हो गया था। श्री पेमाराम जी अचानक बिमार हो गये थे। आसाम में ईलाज करवाया परंतु ईलाज सफल नहीं हुआ। श्री पेमाराम जी ने महाजन को अपने गांव मैणासर भिजवाने के लिए कई बार बोला था। अपना हिसाब करने के लिए भी कई बार बोला था। मगर महाजन बहाना बाजी व हर बार टालता रहा। श्री पेमाराम जी को बिमार हुये काफी समय निकल चुका था। इसलिए शरीर भी बहुत कमजोर हो गया था। आसाम में काफी समय बीत जाने से घरवालों की याद भी आने लग गई थी।

उस समय साधन का अभाव था। आदमी मनमर्जी से आना – जाना नहीं कर सकता था। गांव मैणासर में श्री गुमानीराम जी को देव लोक हुये 6 महीनें बीत चुकें थे। श्री गुमानीराम जी मानव रूप धारण कर आसाम अपने भाई के लड़के पेमाराम जी के पास गये। और हाल – चाल व कुशल क्षेम पुछी। तब श्री पेमाराम जी ने अपने ताऊजी को आप बिती बताई। व बोलें में बहुत परेशान हूँ। मुझे गांव भिजवाओं। आप ताऊजी यहां आसाम क्यों आये हो। मुझे बताओं । श्री गुमानीराम जी ने कहा – मैं हरिद्वार आया था। फिर में तेरे से मिलन के लिए आसाम आ गया। श्री गुमानीराम जी ने श्री पेमाराम जी के सेठ (महाजन) से मुलाकात की और अपना परिचय बताते हुये गांव मैणासर और सभी जगह के हालात पर चर्चा की। तथा पेमाराम जी को गांव मैणासर भिजवानें की व्यवस्था व श्री पेमाराम जी के आज तक का हिसाब करने का मशुरा भी किया। अतः श्री पेमाराम जी की गांव भिजवाने की व्यवस्था करके वहां से रवाना कर बाकी हिसाब श्री गुमानीराम जी ने कहा तुम्हारे गांव पहुंचने के बाद मैं तुम्हारे सैठ से भिजवा रहा हूँ। तुम आराम से गांव पहुंच जाना। मैं वापिस हरिद्वार मेरे गुरू के पास जाऊँगा। तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा।

अतः श्री पेमाराम जी गांव पहुंचने के बाद सभी घरवालों को व गांव वालों को आप बिती का सारा वृतांत सुनाया। गांव वालों ने अफसोस किया और श्री पेमाराम जी को बताया कि श्री गुमानीराम जी महाराज तो आज से छः महीने पूर्व ही देव – लोक हो गये थे। अतः हम आप की बात कैसे मानें कि श्री गुमानीराम जी महाराज ने मानव रूप धारण करके आपको आसाम से यहां भिजवाया है।

तब श्री पेमाराम जी ने कहा कि सैठ में मेरा बकाया हिसाब–किताब भी ताऊजी श्री गुमानीराम जी ने भिजवाने का जिम्मा लिया है। और ताऊजी ने मुझे गांव के लिए रवाना किया। और आप खुद मुझे हरिद्वार का कहकर वहीं से गायब हो गये। कुछ दिनों बाद श्री पेमाराम जी का बकाया हिसाब – किताब भी गांव मैणासर पहुंच गया। कुछ समय बाद सेठ खुद अपने गांव बीकानेर आया। यहां के कुछ स्थानीय लोगों से सेठ की मुलाकात हुई। तब श्री सेठ ने आसाम में गांव मैणासर के श्री गुमानीराम जी के नाम के व्यक्ति द्वारा और श्री पेमाराम जी के नाम के ताऊ बताकर मुझे पेमाराम जी को गांव मैणासर भिजवाने के लिए कहा। और मैनें सारी व्यवस्था करकें श्री पेमाराम जी को उनके गांव भिजवा दिया था।

इस प्रकार का वृतांत सुनकर गांव के सभी लोगों ने श्री गुमानीराम जी महाराज को नमन किया। श्री पेमाराम जी ने गांव आने के बाद में शादी की तथा आज भी उनका बहुत बड़ा परिवार गांव मैणासर में निवास करता है।

श्री गुमानीराम जी महाराज की जीवनी व पर्चे बहुत हैं। मुझे जहां तक विदित है। मैनें लिख दिया है।

श्री गुमानीराम जी दादोजी महाराज के परिवार का विवरण :– श्री गुमानीराम जी 9 भाई व 1 बहिन थे।

1. फताराम, 2. राजराम, 3. किसनाराम, 4. अमराराम, 5. चेतनराम, 6. चौखाराम, 7. बालराम, 8. गुमानीराम, 9. उमाराम तथा 1 बहन रूकमा थी। रूकमा की शादी सालासर की हुई थी।

मैणासर के खीचड़, नानगराम जी खीचड़ के वंशज है। श्री नानगराम जी खीचड़ के दो बेटे थे।

1.बींजाराम, 2. दुदाराम तथा श्री नानगराम के तीन बेटी – 1. किसनी, 2. फुला, 3. धनी थी।

मेरी हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि कोई त्रुटि हो या कोई शब्द भूलवंश रह गया हो तो क्षमा प्रार्थी हूँ। मैं अब इनकी जीवनी व पर्चे आदि का यहीं पर विराम देता हूँ।

–: जय श्री दादोजी महाराज :–